Part III Hdw
P. VIII

"चन्द्रगुप्त का मेहरौली-लौह स्तम्भ अभिलेख"

Que:-6 Identification of king ChandraGupta of Meharauli Iron pillar Inscription.

ANS—

प्रस्तुत अभिलेख लोहे के एक स्तम्भ पर अंकित है जो दिल्ली से नौ मील दक्षिण मेहरौली नामक स्थान पर स्थापित है। इस अभिलेख को प्रकाश में लाने का श्रेय लेफ्टिनेन्ट डब्ल्यू० ईलियट को दिया जाता है, किन्तु जेम्स प्रिन्सेप ने इसे सर्वप्रथम प्रकाशित किया। चौथी शती ई० के गुप्ता ब्राह्मी में लिखे इस अभिलेख की भाषा संस्कृत है।

छः पंक्तियों के इस अभिलेख में तीन पद्य हैं जो शार्दूल विक्रीडित छंद में है। प्रथम पद्य अथवा पहली और दूसरी पंक्तियों में उल्लेख है कि राजा ने अपने भुजबल से ① बंग (बंगाल) को विजित किया था तथा (2) सिन्धु नदी के सातों मुखों को पारकर बाल्हिका देश (पंजाब अथवा बल्ख तक पहुँच गया। इसके अतिरिक्त उसका प्रभुत्व ③ दक्षिण समुद्र तट तक था। दूसरे पद्य अथवा तीसरी और चौथी पंक्तियों में उल्लेख है कि यद्यपि राजा अब इस संसार में नहीं रहा, किन्तु कीर्तिक रूप में वह अब भी इस संसार में वर्तमान है। तीसरे पद्य अथवा पाँचवी और छठी पंक्तियों से मालूम होता है कि राजा का नाम "चन्द्र था। जिसने अपने भुजबल से एकाधिराज स्थापित कर विष्णुपद गिरि पर विष्णुध्वज स्थापित किया। (जिस पर प्रस्तुत लेख अंकित है।)

प्रशस्ति के स्वरूप से ऐसा प्रतीत होता है कि उसका उल्लेख अलिखन 'चन्द्र' के मृत्युपरान्त हुआ था। जिसका प्रभाव समुद्र तट तक विस्तृत था। यह राजा "चन्द्र" कौन था एक विवादास्पद प्रश्न है विभिन्न विद्वानों ने इसका समीकरण विभिन्न ऐतिहासिक राजाओं से किया है। इस विवाद ग्रस्त प्रश्न पर विचार करने से पूर्व निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखना आवश्यक प्रतीत होता है—

Scanned with CamScanner

(1) मेहरौली का लौह स्तम्भ अपने मूल स्थान पर स्थित है। इसे किसी दूसरे स्थान से नहीं लाया गया है जैसा कि रसायनिक परीक्षण से विदित होता है।

(२) लिपि-शास्त्र के अनुसार प्रस्तुत अभिलेख का आलेखन गुप्तकाल में हुआ क्योंकि इसमें पाँचवी शदी ई० की उत्तर भारतीय ब्राह्मी लिपि का प्रयोग किया गया है।

(3) राजा चन्द्र का राज्य पश्चिम में कम से कम पंजाब और पूर्व दिशा में बंगाल तक अवश्य ही विस्तृत था।

(4) राजा चन्द्र वैष्णव धर्म (भागवत धर्म) का अनुयायी था।

A प्रोफेसर एच. सी. से० ने राजा चन्द्र का समीकरण चन्द्रगुप्त मौर्य से किया है। उनके मतानुसार समुद्रगुप्त ने चन्द्रगुप्त मौर्य को अपना आदर्श नायक मानकर सम्मान में लेख अंकित करवाया था। समुद्रगुप्त सम्भवतः वैष्णव था। उसके लिए आदर्श नायक रघु और राम हो सकते थे जिसकी स्तुति में कालिदास ने रघुवंश की रचना की। उस समय तक तो चन्द्रगुप्त मौर्य को सम्भवतः भुला भी दिया गया था। लिपि विकास के क्रम में मेहरौली का लेख प्रयाग प्रशस्ति से बाद का जान पड़ता है। अतः किसी भी हालत में राजा चन्द्र का समीकरण चन्द्रगुप्त मौर्य से नहीं किया जा सकता है।

(B) एच. सी. राय चौधरी ने चन्द्र का समीकरण नागवंश के राजा चन्द्रांश से किया है। यद्यपि वह स्वयं अपने विचार पर दुविधा प्रकट करते हैं। पुराणों में इस नाग राजा का उल्लेख मिलता है। किन्तु मेहरौली अभिलेख के चन्द्र के समान महत्वपूर्ण, पराक्रमी, शक्तिशाली और महान् विजेता नहीं प्रतीत होता।

(C) हर प्रसाद शास्त्री ने चन्द्र की एक रूपता पुष्करण के राजा चन्द्रवर्मन से की है। चन्द्रवर्मन का उल्लेख बाँकुड़ा के निकट सुसुनिया शिलालेख में मिलता है। जिसके अनुसार वह पुष्करण से बंगाल तक पहुँचा। वह भी वैष्णव था। पुष्करण की समानता राजस्थान में स्थित पोखरण से की जा सकती है। भट्टशाली ने भी समाचार